भोपाल में सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 11 से 17 फरवरी तक सकल दि. जैन समाज कोहेफिजा भोपाल द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के प्रात: **सिद्धचक्र महामंडल विधान की जयमाला** एवं सायं **समयसार का सार** पर प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के व्याख्यानों का लाभ मिला। संपूर्ण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित हुये।

प्रथम दिन नवनिर्मित महावीर स्वाध्याय भवन का उद्घाटन माननीय श्री उमाशंकरजी गुप्ता (गृहमंत्री म.प्र. शासन), श्री कैलाशचंदजी मिश्र (अध्यक्ष-नगर निगम भोपाल), तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों, गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में श्रीमती बदामीबाई महेन्द्र सुनील जैन 501 परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनंदनकुमारजी खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल ने संपन्न कराये।

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में -

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनाँक 7 से 11 फरवरी तक द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री सिद्धचक्रमहामंडल विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के समयसार की 19 वीं गाथा के आधार से हुये मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सिद्धायतन के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

शिविर का उद्घाटन श्री दीपचंदजी जैन अमरमऊ ने किया। विधानकर्त्ता श्री बाबूलालजी जैन शाहगढ थे। ध्वजारोहण श्री अशोकजी जैन जबलपुर के करकमलों से किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. नन्हे भैया, श्री अभिषेकजी एवं श्री सुमितजी शास्त्री ध्रुवधाम-बांसवाड़ा ने सम्पन्न कराये। कार्यक्रम का संयोजन श्री एम. एल. जैन बड़ामलहरा एवं श्री मस्ताई प्रमोद जैन घुवारा ने किया।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 320 अंक : 8

सुमर सदा मन...

सुमर सदा मन आतमराम।। टेक।।
स्वजन कुटुम्बी जन तू पोखे, तिनको होय सदैव गुलाम।
सो तो हैं स्वारथ के साथी, अन्तकाल नहीं आवत काम।।
सुमर सदा मन...।। 1।।
जिमि मरीचिका में मृग भटके, परत सो जब ग्रीषम घाम।
तैसे तू भवमांहि भटके, धरत न इक छिनहू विसराम।।
सुमर सदा मन...।। 2।।
करत न ग्लानी अब भोगन में, धरत न वीतराग परिनाम।
फिर किमि नरकमाहिं दुख सहसी, जहँ सुख लेश न आठौं जाम।।
सुमर सदा मन...।। 3।।
तातैं आकुलता अब तजिके, थिर ह्वै बैठो अपने धाम।
'भागचंद' बसि ज्ञान नगर में, तजि रागादिक ठग सब ग्राम।।
सुमर सदा मन...।। 4।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

छहढाला प्रवचन

मिथ्याचारित्र का स्वरूप

जो कुगुरु-कुदेव-कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन-अम्बरतैं सनेह।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्मजल उपल नाव।
जो राग-द्वेष मलकरि मलीन वनिता-गदादिजुतचिह्नचीन।।१०।।
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भवभ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस-थावर मरण खेत।।११।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।१२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : प्रतिमा तो अजीव पदार्थ से निर्मित है, क्या आप उसको जीव मानते हो ?

उत्तर : अजीव होते हुए भी प्रतिमा में ज्ञानबल से भगवान की स्थापना है और भाव निक्षेप से भगवान कैसे होते हैं ? धर्मी को इसका ज्ञान है; अतः उनका भगवान को स्मरण करना और प्रतिमाजी में उनकी स्थापना का संकल्प करके भक्ति-विनय-वंदन-पूजन करना योग्य है।

इसमें यद्यपि शुभराग है; परन्तु यह मिथ्यात्व नहीं है; क्योंकि उसमें देव का स्वरूप विपरीत नहीं माना है। जिनको भाव निक्षेप से भगवान के स्वरूप की पहचान नहीं है, वे लोग स्थापना निक्षेपरूप भगवान का निषेध करते हैं; उन्होंने भगवान को पहचाना ही नहीं है।

अहा ! धर्मात्मा के अंतर में तो सर्वज्ञ परमात्मा बस रहे हैं, उनके श्रद्धा-ज्ञान में परमात्मा विराजते हैं; इसलिये उनके भक्ति आदि के भाव भी अलौकिक होते हैं, स्थापना निक्षेप भी उन्हें ही सच्चा होता है। जैसे पिता के प्रति बहुमानवाला पुत्र चित्र में, उनकी स्थापना करके कहता है कि 'ये मेरे पिताजी हैं' - वहाँ उसको सच्चे पिता एवं स्थापनारूप पिता - दोनों का ज्ञान है, वैसे ही सर्वज्ञपद जिनको प्रिय है - ऐसे साधक जीव अपने परमप्रिय धर्मपिता सर्वज्ञदेव को पहचानकर प्रतिमा आदि में उनकी स्थापना करके बहुमान करते हैं कि 'ये मेरे भगवान हैं,

मेरे धर्मपिता हैं, हम इनके पुत्र हैं।' - इसप्रकार इष्टदेव के प्रति धर्मी जीव को बहुमान आता है।

देवगति के जीवों को भी देव कहा जाता है; परन्तु वे देव वीतरागी-सर्वज्ञ नहीं हैं। जगत् में अरिहंतदेव और सिद्धदेव ही सच्चे वीतरागी-सर्वज्ञ देव हैं। वे ही इष्ट परमेश्वर और परमात्मा हैं। अरे ! मूर्ख लोग ऐसे परमात्मा के सच्चे स्वरूप को भूलकर पीपल आदि वृक्ष को, सर्प-बंदर आदि पशु को तथा और भी अनेक प्रकार के रागी-द्वेषी कुदेवों को देव मानकर पूजने लग जाते हैं; अरे ! और तो क्या ! सच्चे वीतरागी देव में भी राग-द्वेषरूप कार्य (हिंसा, आहारादि) होना मानकर उनका स्वरूप विकृत बना देते हैं; उन सबको देवमूढ़ता है।

उनमें बहुत अविवेक और मिथ्यात्व की तीव्रता है।

जबतक देव-गुरु का सच्चा स्वरूप व्यवहार से पहचाने, उनके कहे हुए वीतरागधर्म की श्रद्धा करे, और बाद में वैसा अनुभव करे, तबतक जीव के मिथ्यात्व की मंदता रहती है; परन्तु जिनकी समझ ही विपरीत है और जो देव-गुरु का सच्चा स्वरूप नहीं जानकर, विपरीत मानकर कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का सेवन करते हैं, उनके मिथ्यात्व की तीव्रता है।

ऐसे जीवों को अत्यन्त करुणापूर्वक समझाते हैं कि हे भाई ! यदि तुम अपना हित चाहते हो तो भगवान अरिहंतदेव के सिवाय अन्य देवों को मानना छोड़ दो; हित का सच्चा मार्ग दिखलाने वाले भगवान अरिहंत ही हैं। ऐसे वीतरागी भगवान को छोड़कर मोही जीवों को कौन भजेगा ? - जो स्वयं तीव्र मोही होगा, वही उनको भजेगा; किन्तु जो विवेकी अपना हित चाहनेवाला है, वह किसी भी कुदेव को नहीं भजेगा।

भाई ! मोही जीव तो तेरे जैसा ही है, उसको भजने से तो तेरा मोह ही पुष्ट होगा... और तू संसार में डूबेगा। अरे ! जिस परम सुखरूप इष्टपद को तुम चाहते हो, वैसा अपने इष्टदेव को तो पहचानो। जो अपने इष्टदेव को भी न पहचाने उसकी मूर्खता का क्या कहना ?

इसप्रकार कुदेव और सच्चे देव के स्वरूप की पहचान कराकर कुदेव का सेवन छोड़ने का उपदेश दिया। अब कुगुरु और कुदेव की तरह कुधर्म का भी सेवन छोड़ने के लिये उसका स्वरूप दिखाते हैं।

रागादिक भावहिंसा और त्रस-स्थावर के घातरूप द्रव्यहिंसा सहित मिथ्या क्रिया में धर्म मानना कुधर्म है। ऐसे कुधर्म का सेवन तीव्र मिथ्यात्व है। जैनधर्म तो वीतरागता का ही पोषक है, वीतरागभाव ही धर्म है। जो यज्ञादिक में पंचेन्द्रिय पशु को होमकर धर्म माने, अपने शरीर का माँस काटकर दूसरे माँसाहारी को खिलाने में दानधर्म माने, नदी-समुद्र आदि में स्नान करने से धर्म माने - यह सब कुधर्म का सेवन है, उसमें हिंसा की पुष्टि है। यदि त्रस जीवों की हिंसा से भी धर्म होगा, तो नरक में कौन जायगा ? त्रसहिंसा के तीव्र पाप का फल तो नरक ही है, उसमें धर्म कैसा ? जब शुभराग को धर्म माननेवालों को भी सच्चे धर्म की पहचान नहीं है,

तब पाप में धर्म माननेवालों की तो बात ही क्या ? शुभराग से स्वर्ग मिलता है, मोक्ष नहीं। मोक्ष तो वीतरागभाव से ही मिलता है; अतएव वीतरागभाव ही धर्म है और वीतरागभाव शुद्धात्मा के अनुभव से ही होता है; अतः शुद्धात्मा का अनुभव ही धर्म है।

वीतरागी देव-गुरु की पूजादि में शुभभाव है। यद्यपि उसमें अल्प हिंसा है; परन्तु एक तो उसमें हिंसा का अभिप्राय नहीं है, दूसरा यह कि श्रावक के द्वारा स्थावर हिंसा का निवारण नहीं हो सकता और तीसरा यह कि वे उस हिंसा को धर्म नहीं मानते। उसमें हिंसा अल्प है और शुभभाव अधिक है ('सावद्य लेशो बहु पुण्यराशि'); अत: अशुभ राग से बचने के लिये पूजन-भक्ति का शुभभाव योग्य ही है। उसमें हिंसा का या राग-द्वेष की पुष्टि का अभिप्राय नहीं है; परन्तु वीतरागता का ही बहुमान व अनुमोदन है, वह क्रिया अहिंसा की अनुबन्धनी कही गई है। स्थावर हिंसा का, जिनमें परिहार नहीं हो सकता; किन्तु त्रसहिंसा और अशुभपरिणामों से बचाने वाली शुभक्रियाएँ, पूजा, आहारदानादि गृहस्थ भूमिका में होती हैं, बाद में मुनिदशा में शुद्धोपयोग होने पर ऐसा शुभराग भी छूट जाता है।

जो गृहस्थ अपने परिणामों का विवेक न करके चाहे जैसे हिंसाकार्य में प्रवर्तने लग जाय, यहाँ उसकी बात नहीं है; रात्रि में चाहे जैसा आरम्भ-समारम्भ या जिसमें त्रस जीवों का निकंदन नजरों से दिखाई देता हो - ऐसे कार्य तो गृहस्थ को भी नहीं करना चाहिए। रात्रि के समय भोजन या पूजनादि कार्य भी न करें; सब तरह का विवेक होना चाहिए।

भाई ! सर्वज्ञ के मार्ग में तो जिस किसी भी तरह अपनी कषाय मिटे और वीतरागता हो ऐसे विवेक से प्रवर्तन करना चाहिए। अपने परिणाम को देखकर, जैसे अपने को वीतराग-विज्ञान का लाभ हो ऐसा आचरण करना चाहिए। धर्म के नाम पर जिसमें त्रसहिंसा होती हो या किसी प्रकार की हिंसा को धर्म मनाया जाता हो - ऐसे कुमार्ग व कुधर्म को दूर से ही छोड़ देना चाहिए। वह कुमार्ग तो विषय-कषायों का पोषक है, उसके सेवन में जीव का बहुत अहित है। हे भाई ! तुम सच्चे मार्ग को तो पहचानो - जिसके सेवन से तुम्हारा हित हो।

देव-गुरु-धर्म की पहचान में जिसकी भूल है और विपरीत का जो सेवन करता है, उसको गृहीतमिथ्यात्व है; जो उस गृहीतमिथ्यात्व को छोड़कर सच्चे देव-गुरु का सेवन करता है; परन्तु जीवादि तत्त्वों के यथार्थ निर्णय में जिसकी भूल है, उसको भी अबतक अगृहीत मिथ्यात्व है; सच्चे देव-गुरु-धर्म को पहचानकर और उनसे प्रतिपादित जीवादि तत्त्वों का यथार्थ स्वरूप पहचानकर श्रद्धा करने से, गृहीत एवं अगृहीत दोनों मिथ्यात्व छूटकर अपूर्व सम्यग्दर्शन होता है; वह महान कल्याण करने वाला है।

इस प्रकार ९ से १२ तक चार छंदों में कुगुरु-कुदेव-कुधर्म के सेवनरूप गृहीतमिथ्यादर्शन का स्वरूप दिखलाकर उसके त्याग का उपदेश दिया; अब गृहीतमिथ्यादर्शन के सहकारी गृहीतमिथ्याज्ञान का स्वरूप दिखलाकर उसके भी त्याग का उपदेश १३वें छंद में देंगे। ●

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है॥३८॥

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय हैं।

(गतांक से आगे...)

(५) स्वद्रव्य में जिनकी तीक्ष्ण बुद्धि है ह्न 'मैं शुद्ध जीवतत्त्व हूँ, कर्म और शरीर अजीव हैं' - इत्यादि सात तत्त्वों का विकल्प परद्रव्य है। राग के ओर की वृत्ति टूट गई है, अजीव (कर्मरूप निमित्त) का अथवा पुण्य-पाप का अवलम्बन नहीं है, स्वद्रव्य का अवलम्बन वर्त्त रहा है। मात्र स्वद्रव्य में ज्ञान को उग्र करके अन्तर में गुम हो गया है और छठे गुणस्थान में कभी-कभी भिक्षा अथवा उपदेश का विकल्प उठे; तथापि उस विकल्प से अत्यन्त पराङ्मुख हैं।

विकल्परूपी परद्रव्य से अभावरूप होकर अपने ज्ञानस्वभावरूप में समय-समय परिणमन कर रहे हैं। छठे-सातवें गुणस्थान में हजारों बार झूलते हैं। छठे गुणस्थान में विकल्प उठता है; यदा-कदा सातत्त्वों का विकल्प भी होता है; तथापि वे महा मुनिराज उससे अत्यन्त पराङ्मुख हैं। त्रिकाली ज्ञानस्वभाव के अस्तिरूप परिणमन से उनका सातत्त्वों के विकल्प के अभावरूप परिणमन हो रहा है। यहाँ परद्रव्यों से पराङ्मुख कहकर नास्ति से कथन किया तथा स्वभाव में तीक्ष्णबुद्धि कहकर अस्ति से कथन किया है। अस्ति-नास्ति दोनों एक ही समय में है।

तत्त्वार्थसूत्र में सातततत्त्वों की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा और यहाँ सात तत्त्वों को हेय कहा - ऐसा क्यों ? उमास्वामी आचार्य ने तत्त्वार्थसूत्र में तथा पं. टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक में सात तत्त्व अथवा नवतत्त्व की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा है; वहाँ व्यवहार सम्यग्दर्शन की बात नहीं है; अपितु निश्चय सम्यग्दर्शन की ही व्याख्या है।

यहाँ कोई **प्रश्न** कर सकता है कि इस शास्त्र में तो सात तत्त्वों को परद्रव्य कहकर हेय कहा है तो फिर इन दोनों कथनों में सुमेल किसप्रकार है ?

उसका समाधान :- यहाँ नियमसार में सातततत्त्वों को परद्रव्य कहकर रागयुक्त श्रद्धा को हेय कहा है; इसमें विकल्प उठने से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति नहीं होती, इसलिये हेय कहा है; जबकि तत्त्वार्थसूत्र में रागरहित नवतत्त्व की श्रद्धा की बात है। धर्मी जीव जब अपने त्रिकाली शुद्धस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करके स्व-अस्तिरूप से परिणमन करता है, तब सात तत्त्वों के विकल्प का परिणमन नास्तिरूप हो रहा है अर्थात् उसमें सातों का निर्विकल्पज्ञान आ जाता है।

सात तत्त्वों को जुदा-जुदा देखने से आत्मा या सात तत्त्व का यथार्थ ज्ञान नहीं होता; जबकि सातों के विकल्प के अभाव से स्व की अस्तिरूप परिणमन में ज्ञान के स्व-पर प्रकाशक स्वभाव के कारण सातों तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। इस अपेक्षा से सात अथवा नवतत्त्व की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहना उचित ही है।

इसप्रकार जो वैराग्यवंत मुनि उपशमरस में झूलते हैं या स्वभाव में मग्न हो गये हैं, वे जिस भाँति पूड़ियाँ घी में डुबाने से निमग्न हो जाती हैं; उसी भाँति आत्मरस में निमग्न हैं; उनको अमृत का झरना - शान्ति का झरना फूटता है; ऐसे शान्तरसवाले मुनिराजों को सातततत्त्व के विकल्प से रहित आत्मा वास्तव में उपादेय है। रागसहित होने से सात तत्त्व उपादेय नहीं हैं - ऐसा पहले कहा था और अब यहाँ आत्मा उपादेय है - ऐसा कहकर अस्ति-नास्ति से कथन किया है।

इसमें सम्यग्दर्शन, वैराग्य, परिग्रह आदि सभी की व्याख्या हो गई। यहाँ आचार्यदेव ने संक्षेप में त्रिकाली स्वभाव तथा सात तत्त्व आदि के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट कथन कर दिया है। इसप्रकार मुनियों को वास्तव में 'आत्मा' ही उपादेय है। वह आत्मा/कारणपरमात्मा कैसा है ? इसकी चर्चा आगे करेंगे। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : विकल्प से निर्विकल्प होने में सूक्ष्म विकल्प रोकता है, उसका क्या करें?

उत्तर : निर्विकल्प होने में विकल्प रोकता नहीं है। वास्तविकता यह है कि तू स्वयं अन्दर में ढलने योग्य पुरुषार्थ करता नहीं है, इसलिए विकल्प टूटता नहीं है।

विकल्प को तोड़ना नहीं पड़ता; किन्तु स्वरूप में ढलने का पुरुषार्थ उग्र होने पर विकल्प सहज ही टूट जाता है।

प्रश्न : सम्यक्त्वसन्मुखजीव तत्त्व के विचार में राग को अपना जानता है क्या ?

उत्तर : सम्यक्त्वसन्मुखजीव ऐसा जानता है कि राग है, वह मेरा अपराध है; राग मेरा स्वरूप नहीं, राग मैं नहीं- ऐसा जानकर उसका लक्ष्य छोड़कर अन्दर में जाने का- आत्मानुभव करने का प्रयत्न करता है।

प्रश्न : दृष्टि का जोर कहाँ देने पर सम्यग्दर्शन प्रगट होगा ?

उत्तर : ज्ञायक निष्क्रियतत्त्व के उपर दृष्टि डालो न ! पर्याय के उपर जोर देने से क्या लाभ ? यह मेरी क्षयोपशम की पर्याय बढी, यह मेरी पर्याय हुई-इसप्रकार पर्याय के उपर लक्ष्य देने से क्या काम बनेगा? पर्याय पलटने पर उस अंश में त्रिकाली वस्तु थोड़े ही आ जाती है?

अरे भाई ! त्रिकाली ध्रुवदल जो नित्यानन्द प्रभु है, उसके उपर दृष्टि का जोर दो न ! ज्ञानानन्द सागर की तरंगें उछलती हैं, उस पर लक्ष्य डालो न ! तरंगों को न देखकर आनन्द सागर के दल उपर दृष्टि डालो अर्थात् अनादि क्षणिकपर्याय को ही लक्ष्य बना रहे हो, उसको छोड़ दो और त्रिकाली ध्रुव नित्य ज्ञायक दल के उपर दृष्टि को दृढ स्थापित करो तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की निर्मल पर्याय प्रगट होगी।

प्रश्न : मोक्षमार्ग में धारणाज्ञान के बल से आगे नहीं बढते तो किसके बल से आगे बढते हैं?

उत्तर : द्रव्यस्वभाव के बल से आगे बढा जाता है। ज्ञायकभाव, चैतन्यभाव, द्रव्यभाव आदि जिसके ही नाम हैं-इसकी तरफ का जोर आना चाहिए।

समाचार दर्शन -

भोपाल में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 11 से 14 फरवरी तक अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह भव्यतापूर्वक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता श्री बाबूलालजी गौर (पूर्व मुख्यमंत्री एवं मंत्री म.प्र. शासन) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री सुनीलजी सूद (पूर्व महापौर) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुभाषजी जैन (आई.ए.एस.), श्रीमती विमला जैन (जिला जज), श्रीमती मोनिका जैन (पार्षद) एवं श्री मुकेशजी जैन (ढाई द्वीप जिनायतन) इंदौर मंचासीन थे।

विशिष्ट विद्वानों के रूप में सम्मानमूर्ति डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त कविवर राजमलजी पवैया भोपाल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, डॉ. कपूरचंदजी कौशल भोपाल, ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा मंचासीन थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण कीर्ति चौधरी ने किया। दीपप्रज्वलन के पश्चात् आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री एम.के.चौधरी ने समागत अतिथियों का वचन पुष्पों से स्वागत किया।

इस अवसर पर समग्र जैन समाज द्वारा शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदानकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। खण्डेलवाल समाज भोपाल संभाग की ओर से श्री सुभाषजी काला ने, तदुपरान्त आयोजन समिति के 63 लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। सम्मान के पूर्व पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान मंत्री म.प्र. शासन श्री बाबूलालजी गौर ने अपने भाषण में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को ज्ञान का राजदूत बताते हुये कहा कि जिसप्रकार एक देश की राजनैतिक सूचनाओं/खबरों/संदेशों को दूसरे देश में पहुँचाने वाले को राजदूत कहते हैं, जो कि उस देश की नीतियों को विश्व में फैलाते हैं; उसीप्रकार डॉ. भारिल्ल विगत 29 वर्षों से अपने देश की संस्कृति एवं ज्ञान को देश-देशान्तर में पहुँचाने का विशिष्ट कार्य अनवरतरूप से कर रहे हैं; इसलिये मैं इन्हें **ज्ञान के राजदूत** की दृष्टि से देखता हूँ।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं; अपितु भगवान महावीरस्वामी की वाणी का, जिनवाणी का, गुरुदेवश्री का सम्मान है, जिनके द्वारा मुझे यह तत्त्वज्ञान मिला है।

डॉ. भारिल्ल के अभिनंदन के अतिरिक्त कविवर **पण्डित राजमलजी पवैया भोपाल**, श्रीमती बदामीबाई 501 व श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर श्री मुकेशजी जैन ढाई द्वीप जिनायतन इन्दौर की ओर से **णमोकार महामंत्र** पुस्तक एवं **आत्मा की खोज** (डॉ. भारिल्ल के 215 घण्टे के प्रवचन) डी.वी.डी के अतिरिक्त 15000/-रुपये का साहित्य नि:शुल्क वितरित किया गया। कार्यक्रम के पूर्व खचाखच भरे हॉल में डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

सभी कार्यक्रम श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री अशोकजी जैन (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्री सुनीलजी जैन 501, श्री प्रभातजी बज, श्री अरुणजी वर्धमान एवं श्री जितेन्द्रजी सोगानी के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

170 तीर्थंकर विधान एवं ढाईद्वीप शिलान्यास सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ नेमीनगर जैन कॉलोनी में दिनांक 14 से 17 जनवरी, 2010 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं नेमिनाथ दि.जैन मंदिर नेमीनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में 170 तीर्थंकर मण्डल विधान, द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं प्रतिष्ठेय 151 प्रतिमाओं की द्वितीय विशाल प्रभावना यात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मूडबिद्री के भट्टारक श्री चारुकीर्ति स्वामीजी, अन्तरर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा का समागम मिला।

ध्वजारोहण श्री मांगीलालजी अनीषकुमारजी ऋषभजी-नृसिंहपुरा ने तथा उद्घाटन श्री राजेन्द्रकुमारजी आशीषजी अविनाशजी सेठी-राजचन्द्रनगर, इंदौर ने किया। आयोजन के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री कमलकुमार कन्हैयालालजी पाडलिया इन्दौर, श्री विमलजी (नीरु कैमिकल) दिल्ली, श्री कैलाशबेन भरतभाई मेहता टोरंटो कनाडा, श्री जिनेन्द्रजी जैन अमेरिका थे।

अंतिम दिन 17 जनवरी को ढाई द्वीप जिनायतन में हीरे, सोने, चाँदी और ताँबे की 8945 तगारियों द्वारा क्रेन से 47 फीट ऊपर जाकर मेरुपर्वत की कार सेवा की गई। प्रथम तगारी में श्रवणबेलगोला के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी द्वारा भेजेगये रत्न पुष्प तथा मूडबिद्री के भट्टारकजी द्वारा साथ में लाये गये रत्नों को डालने का सौभाग्य श्री एम.के. जैन-सुभाषनगर, इन्दौर को मिला।

कार्यक्रम के अंत में ढाईद्वीप जिनायतन ट्रस्ट की ओर से ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी, पण्डित रतनलालजी शास्त्री, पण्डित रमेशचंदजी बांझल, डॉ. ममताजी जैन बांसवाड़ा, श्री सुन्दरलालजी बीड़ीवाले, डॉ. अशोकजी जैन, श्री कमलजी बड़जात्या मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, श्री उल्लासभाई जोबालिया एवं श्रीमती शशिकलाबेन मुम्बई का सम्मान किया। इसी प्रसंग पर श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट के नये ट्रस्टी बनने पर श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत का सम्मान भी किया गया।

सम्मान से पूर्व भट्टारक चारुकीर्तिस्वामीजी-मूडबिद्री के मार्मिक उद्बोधन एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **आत्मा की खोज** पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

इसी दिन 108 कमरों की धर्मशाला का शिलान्यास स्व.संतोषबेन चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से डॉ. राजेश जैन इन्दौर ने किया, जिसे भट्टारक चारुकीर्तिजी ने पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सहयोग से सम्पन्न कराया।

170 तीर्थंकर विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित संदीपजी शास्त्री चैतन्यधाम-अहमदाबाद, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित शीतलजी पाण्डेय उज्जैन, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन एवं पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति

कारंजा निवासी अध्यात्म प्रवक्ता पण्डित धन्यकुमारजी भोरे का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 4 जनवरी को देहावसान हो गया। उनके देहावसान से संपूर्ण भारतवर्ष के जैन समाज ने एक अनमोल रत्न खो दिया है। उनके निधन से जैन समाज की अपरिमित क्षति हुई है।

आपको चारों अनुयोगों का समीचीन ज्ञान था, उनको द्रव्यानुयोग की विशेष रुचि एवं पकड़ थी। आपने गुरुदेव समंतभद्रजी के आदेशानुसार मराठी भाषी जैन समाज के लिये जिनवाणी को मराठी भाषा में उपलब्ध कराने का कार्य प्रारंभ किया। श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम अंतर्गत कंकुबाई पाठ्यपुस्तक माला द्वारा छहढाला, द्रव्यसंग्रह, तत्त्वार्थसूत्र, नित्यनैमित्तिक पाठावली, रत्नकरण्ड श्रावकाचार तथा जैन सिद्धांत प्रवेशिका आदि अनेक ग्रंथों का संपादन कर प्रकाशन किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संपर्क मे आने के बाद समयसार एवं शुद्धात्मतत्त्व जैसे विषय हाथ लगे। इस रूप में स्वामीजी का उनपर विशेष प्रभाव रहा।

आपके सभी धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं के साथ आत्मीय संबंध थे। वर्ष 2007 में आपको राष्ट्रसंत विद्यानंदजी महाराज ने **'स्वारस्वत मनीषी'** उपाधि से सम्मानित किया।

शोक समाचार

1. अलीगढ (उ.प्र.) निवासी डॉ. महेन्द्रसागरजी प्रचंडिया का दिनाँक 10 जनवरी को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जैनधर्म -दर्शन संस्कृति व साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों में से थे। आपके निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

2. भोपालगंज-भीलवाड़ा (राज.) निवासी श्री चन्द्रप्रकाशजी अजमेरा पुत्र श्री हीरालालजी अजमेरा का दिनाँक 22 जनवरी, 2010 को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप भोपालगंज में स्वाध्याय एवं अन्य धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- प्राप्त हुये हैं।

3. जसवंतनगर-इटावा (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सुशीला देवी ध.प. श्री उत्तमचंदजी जैन का दिनाँक 22 जनवरी, 2010 को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 500/- प्राप्त हुये हैं।

4. सोलापुर (महा.) निवासी श्री कस्तूरचंद गुलाबचंदजी गांधी का दिनाँक 3 दिसम्बर,2009 को णमोकार मंत्र के उच्चारणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति मे वीतराग-विज्ञान में 500/-प्राप्त हुये हैं।

5. गजपंथा-नासिक (महा.) निवासी श्री अमरचंदजी बेलोकर का दिनांक 17 फरवरी को अत्यंत शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। हाल ही में हुये गजपंथा पंचकल्याणक के सफल आयोजन में आपका महत्वपूर्ण योगदान था। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर के भतीजे थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही हमारी मंगल भावना है।

आध्यात्मिक शिविर सानन्द संपन्न

करेली (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 24 से 30 दिसम्बर 2009 तक श्री सीमंधर जिनालय एवं श्री अहिंसा भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ द्वारा जैन सिद्धांत प्रवेशिका, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित विरागजी मंगलार्थी और श्रीमती श्रुति गिडिया द्वारा अहिंसा-प्रथम एवं पण्डित दिविजजी मंगलार्थी द्वारा अहिंसा-द्वितीय विषयों पर प्रात:, दोपहर, सायं एवं रात्रि में 4-4 घंटे कक्षा ली गई।

शिविर का उद्घाटन नागपुर मुमुक्षु मण्डल के महामंत्री श्री अशोककुमारजी जैन (आमगांव वालों) ने किया। शिविर के अन्तिम दिन डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के मुख्य आतिथ्य में भव्य समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें सभी परीक्षार्थियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम व शास्त्र सज्जास्पर्धा के प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

शिविर से प्रभावित होकर आगामी शिक्षण शिविर हेतु श्री अशोकजी बडकर परिवार ने स्वीकृति दी। शिविर की समस्त गतिविधियाँ पण्डित मनोजजी शास्त्री एवं श्री मुकेशजी जैन के निर्देशन मे संपन्न हुयी।

इस शिविर में करेली के अतिरिक्त जबलपुर, सागर, सिवनी, होशंगाबाद, दमोह एवं शहडोल जिले के लगभग 300 शिविरार्थियों ने लाभ लिया एवं 187 लोगों ने परीक्षा देकर प्रमाण-पत्र प्राप्त किये।

शिविर के समापन के उपरांत करेली मुमुक्षु मण्डल द्वारा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि सिद्धायतन, सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, अतिशय क्षेत्र बीना बारह एवं बंडा के स्वाध्याय मंदिर के दर्शनार्थ विशाल बस यात्रा निकाली गयी, जिसमें 213 शिविरार्थी सम्मिलित हुये, सभी शिविरार्थी बच्चों को नि:शुल्क ले जाया गया।

प्रवचनसार शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन रामपुरा में दिनाँक 18 से 25 दिसम्बर तक अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में श्री प्रवचनसार शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित हेमचंदजी हेम देवलाली द्वारा प्रवचनसार के ज्ञेय तत्त्व प्रज्ञापन अधिकार की गाथा 93 से 100 के आधार पर पदार्थ के द्रव्य-गुण-पर्याय स्वरूप की तर्कसंगत एवं आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में सरल व सुबोध शैली में मार्मिक विवेचना की गयी। दोपहर में आचार्य माणिक्यनंदी द्वारा विरचित परीक्षामुख ग्रंथ पर कक्षा ली गयी। **– जिनेन्द्र जैन**

राघौगढ में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

राघौगढ-गुना (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 10 फरवरी को मुमुक्षु मण्डल एवं जैन समाज के तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर एवं मुख्यअतिथि विधायक श्री मूलसिंहजी दादाभाई थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन समाज के उपाध्यक्ष श्री अशोकजी भारिल्ल, श्री चांदमलजी संघवी इंदौर, श्री आनंदकुमारजी पाटनी इंदौर, श्री विजयकुमारजी पत्रकार एवं श्रीमती रामबाई (अध्यक्ष-नगरपालिका राघौगढ) आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री शिवरतनजी जैन (अध्यक्ष - श्री आदिनाथ जिनालय) ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया तथा अभिनंदन-पत्र का वाचन डॉ. अजितजी रावत ने किया। साथ ही जैन मिलन, महासमिति, श्वेताम्बर समाज, नगरपालिका, वीर सेवादल, जैन समाज आदि ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। कुंभराज मुमुक्षु मण्डल की ओर से भी डॉ. साहब का शॉल व श्रीफल भेंटकर अभिनंदन किया गया। श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का स्वागत महिला मुमुक्षु मण्डल की ओर से किया गया।

मंच संचालन श्री प्रेमचंदजी भारिल्ल ने एवं आभार प्रदर्शन श्री शिवरतनजी जैन ने किया ।

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ गोधों की नसियां में दिनाँक 7 से 9 जनवरी तक त्रिदिवसीय रत्नत्रय विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित जयकुमारजी बारां एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन विधान के पश्चात् प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में दो विद्वानों के प्रवचन एवं दोपहर में कक्षा व शंका-समाधान का आयोजन हुआ।

विधान का उद्घाटन श्री नेमीचंद अमितकुमारजी द्वारा, मण्डप उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री अशोककुमारजी चांदवाड झालरापाटन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में लगभग 500 लोगों ने लाभ लिया। समापन के अवसर पर श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री त्रिलोकचंदजी सोनी एवं श्री हीराचंदजी बोहरा द्वारा श्री नेमीचंद अमितकुमारजी बड़जात्या परिवार सूरत का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

दिनाँक 10 से 16 जनवरी तक **वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर** ट्रस्ट पुरानी मण्डी में ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रात: एवं रात्रि में प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मंच का संचालन श्री अमितकुमारजी बड़जात्या द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 16 से 21 जनवरी तक **किशनगढ** में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। **- विजयकुमार पाण्ड्या**

उदयपुर में वेदी प्रतिष्ठा

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 12 व 13 दिसम्बर को सैक्टर - 8 जे.पी.नगर में वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुयी। श्रीमती सुलोचना अग्रवाल एवं श्री ललितजी सिंघल ने अपने निजी प्लाट पर शुद्ध तेरापंथ आम्नाय अनुसार 1008 भगवान आदिनाथ दिग. जिन चैत्यालय का निर्माण कराया; जिसकी वेदी-प्रतिष्ठा के अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री के **जिनदर्शन का महत्व** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। कार्यक्रम में मुमुक्षु मण्डल, वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन नेमीनाथ कॉलोनी एवं मुमुक्षु मण्डल गारियावास सै.-11 का विशेष सहयोग रहा।

इस प्रसंग पर विधानाचार्य डॉ. महावीरप्रसादजी ने भगवान आदिनाथ की प्रतिमा को श्री ललितजी, रमेशजी एवं सतीशजी सिंघल के कर कमलों से विराजमान कराया। **- जिनेन्द्र शास्त्री**

जैन पत्रकार सम्मेलन सम्पन्न

कोलकाता : यहाँ स्थानीय श्री जैन भवन में अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का 23 व 24 जनवरी को दो दिवसीय सम्मेलन समाजसेवी श्री मदनलालजी बज की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। आपने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में पत्रकारों से आव्हान किया कि आप समाज में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करने में अहम् भूमिका निभायें। संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. चिरंजील ाल बगडा ने आगत पत्रकारों का स्वागत करते हुये सभी का परिचय कराया एवं आयोजन हेतु प्राप्त आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी का आशीर्वाद पढकर सुनाया।

इस अवसर पर सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने तीर्थों की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता प्रगट करते हुये कहा कि हमें तीर्थों पर मंडराते भीतरी एवं बाहरी खतरों तथा उनकी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिये। उन्होंने पत्र सम्पादक संघ की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

पत्र सम्पादक संघ के संरक्षक एवं जैन गजट के सम्पादक श्री कपूरचन्दजी पाटनी ने समाज की दशा और दिशा पर विचार प्रगट किये। पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने कहा कि हम अपने जैनत्व को भूलकर वैदकीकरण से ग्रस्त होते जा रहे हैं। इन्दौर से पधारे डॉ. महेन्द्र 'मनुज' ने अंक चन्द्रों पर आधारित सिरी भू वलय ग्रंथ की विस्तृत जानकारी दी।

जयपुर में धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 21 से 31 जनवरी तक दोनों समय ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा दोपहर में आपके द्वारा छात्रों को सामान्य विषयों पर विशेष उद्बोधन दिया गया। रात्रि में ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचनों के पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार की गाथा 74 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर जयपुर शहर के लगभग 200 लोगों ने लाभ लिया। अन्तिम दिन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा सांगानेर संघीजी के मंदिर में शांति विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचन का भी लाभ मिला।

तरुण शिक्षण शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ दिनाँक 24 से 26 जनवरी तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन मुमुक्षु समाज ट्रस्ट, भायंदर के तत्त्वावधान में तृतीय तरुण शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलौद ने पंच भाव, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर ने नय विषय और पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली ने चार अभाव पर कक्षायें लीं।

इस शिविर का आयोजन युवा विद्वान स्व. पंकजभाई शाह की प्रथम पुण्य स्मृति में गजराबेन बाबूलाल शाह परिवार के सौजन्य से किया गया। प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं गुरुदेवश्री के प्रवचन के पश्चात् विभिन्न कक्षाओं का आयोजन होता था।

अंतिम दिन रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया। **– किरीटभाई गांधी**

हार्दिक बधाई

1. बांसवाड़ा (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वर्तमान में रा.उ.मा.वि. रैयाना बांसवाड़ा में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत **श्री रितेश जैन** को तहसील स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में गढी के तहसीलदार श्री आर.एस. राजपुरोहित ने बोर्ड परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम एवं शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे प्रदर्शन हेतु प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मानित किया।

ज्ञातव्य है कि शैक्षिक, भौतिक एवं बालकों में चारित्रिक विकास हेतु किये गये प्रयासों के लिये श्री रितेश जैन को पूर्व में भी अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है।

2. गढी-बांसवाड़ा (राज.) के **प्रधानाचार्य श्री सुशीलकुमारजी जैन** को रा. उ. मा. वि. के प्रांगण में आयोजित तहसील स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में गढी के तहसीलदार श्री आर. एस. राजपुरोहित ने राष्ट्रीय शैक्षिक सेमिनारों में सहभागिता एवं शैक्षिक शोध कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

बच्चों ने पतंग न उड़ाने का संकल्प लिया

जयपुर (राज.) : यहां जनवरी माह में अ. भा.जैन युवा फैडरेशन महानगर जयपुर एवं हिन्दी उत्थान परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में मकर संक्रांति पर बच्चों से चाईनीज मांझे को उपयोग में नहीं लेने की अपील करने संबंधी 2000 पोस्टर श्री संजयजी सेठी एवं श्री भागचंदजी शास्त्री द्वारा तैयार कराकर प्रमुख चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर लगाया गया।

टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने अपने व्याख्यान में बताया कि हिंसा करके पतंग उड़ाना उचित नहीं है। इसके परिणामस्वरूप टोडरमल महाविद्यालय एवं अन्य स्थानों के लगभग 200 बच्चों ने मकर सक्रांति के अवसर पर पतंग न उड़ाकर इसे अहिंसा दिवस के रूप में मनाया। ब्र. यशपालजी जैन ने प्रवचन के उपरांत निरीह पक्षियों की अन्य जिले में हुई अकाल मृत्यु के संबंध में जानकारी दी। **– जिनेन्द्र शास्त्री**

छत्तीसगढ में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

1. खैरागढ (छत्तीसगढ) : यहाँ दिनाँक 17 से 19 जनवरी तक आयोजित कार्यक्रमों के दौरान 19 जनवरी को सकल जैन श्री संघ एवं अ.भा.जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में प्रान्तीय-स्तर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बी.आर.जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष - अ.भा.दि.जैन परिषद) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में पूर्व विधायक श्री कपूरचंदजी घुवारा (अध्यक्ष - म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम एवं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि) उपस्थित थे। मंचासीन विशिष्ट अतिथियों में श्री खूबचंदजी पारख (उपाध्यक्ष-छ.ग.बीससूत्रीय क्रियान्वयन समिति), श्री नरेशजी डाकलिया (अध्यक्ष - सकल जैन श्री संघ एवं महापौर राजनांदगाँव), श्री लोकेशजी कावडिया (प्रांताध्यक्ष -भा.जैन संघटना छ.ग.), श्री रतनचंदजी शाह (अध्यक्ष-सोलापुर जैन समाज), श्री हीरालालजी शाह (संरक्षक-जैन स्वाध्याय मंडल रायपुर), श्री नरेशजी सिंघई (प्रांतीय अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन महाराष्ट्र), श्री प्रकाशचंदजी जैन (संरक्षक-जैन युवा फैडरेशन रायपुर), श्री उत्तमचंदजी गिड़िया (संरक्षक-सकल जैन श्री संघ रायपुर) एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर छत्तीसगढ प्रान्त के डोगरगढ, डोगरगाँव, राजनांदगाँव, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर, धमतरी, घुईखदान आदि नगरों से पधारे विभिन्न संस्थाओं के विभिन्न पदाधिकारियों द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। महाराष्ट्र प्रान्त से श्री महावीर दि.जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर, श्री महावीर विद्या निकेतन एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन नागपुर द्वारा भी डॉ. भारिल्ल का तिलक लगाकर, शॉल ओढाकर एवं माल्यार्पण द्वारा भावभीना अभिनंदन किया गया।

इसके पश्चात् खैरागढ दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री दुलीचंदजी जैन ने तिलक लगाकर, माला एवं साफा पहिनाया। साथ ही सकल जैन श्री संघ के पदाधिकारियों ने श्रीफल एवं अभिनंदन पुष्प भेंट किये। अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं सत्संग महिला मंडल ने भी डॉ. साहब का सम्मान किया। समाज ने उन्हें **'धर्म गूढार्थप्रकाशक'** उपाधि से अलंकृत किया।

अन्त में स्थानीय खैरागढ के सकल जैन श्री संघ, दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघटना, संस्कार युवा मंच, व्यापारी संघ, अधिवक्ता संघ, मुस्लिम कम्युनिटी, नगर पंचायत आदि अनेक धार्मिक/सामाजिक संस्थाओं द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन किया गया।

सम्मान समारोह के पश्चात् अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने कहा कि हीरक जयंती समारोह

का तत्त्व की प्रभावना में बहुत बड़ा योगदान है तथा कार्यक्रम में तत्त्व की प्रभावना ही मुख्य है, जन्मदिन गौण है।

इस कार्यक्रम के पूर्व 17 एवं 18 जनवरी को डॉ. भारिल्ल के **'णमोकार महामंत्र'** एवं **'मैं स्वयं भगवान हूँ'** विषयों पर प्रवचनों का लाभ दिगम्बर, श्वेताम्बर, मुस्लिम आदि समाज के लोगों ने लिया, साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी खैरागढ के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती श्रुति जैन ने किया। अंत में सकल जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री मोतीलालजी गिड़िया ने सभी का आभार प्रदर्शन किया।

2. रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ दिनाँक 20 जनवरी को सुराणा भवन में श्री जैन स्वाध्याय मंडल, श्री वीतराग विज्ञान बहुउद्देशीय समिति एवं जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री सुरेशचंदजी जैन रायपुर (मैनेजिंग ट्रस्टी - दि.जैन मंदिर पंचायत ट्रस्ट), श्री संजयजी नायक (अध्यक्ष - मंदिर कार्यकारिणी), श्री इंदरचंदजी एवं अन्य पदाधिकारियों व गणमान्य नागरिकों द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया।

डॉ. भारिल्ल का परिचय देते हुये श्री प्रकाश जैन (सचिव - जैन स्वाध्याय मंडल) ने कहा कि उनकी प्रवचन शैली एवं लेखन शैली से जैनतत्त्वज्ञान की कठिन व गूढ बातें भी सहजबोधगम्य हो जाती है। श्रीमती ममता जैन (सचिव- टैगोर नगर मंदिर एवं अ.भा.जैन महिला परिषद) ने अपने उद्बोधन में बताया कि अनेक बाधाओं के बावजूद आपने जिनधर्म का ध्वज फहराकर बच्चों, युवकों एवं बुजुर्गों को उनकी शैली में जिनतत्त्व का मर्म बताया है। श्री अरविंदभाई बटाविया एवं श्री कन्हैयालालजी दुग्गड़ ने डॉ. साहब के अलौकिक कार्य की प्रशंसा की एवं गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्व ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने वाला बताया। श्री प्रेमचंदजी गुरहा परिवार ने भी डॉ. साहब का सम्मान किया एवं नि:शुल्क साहित्य वितरित किया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री सुरेन्द्रजी जैन (ट्रस्टी-दि.जैन मंदिर) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। तीनों संस्थाओं ने डॉ. साहब को उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये।

इस अवसर पर सम्मान समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल के णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि खैरागढ से रायपुर जाते हुये मार्ग में **दुर्ग** एवं **भिलाई** में भी डॉ. भारिल्ल के पारिणामिक भाव पर प्रवचनों का लाभ मिला। वहाँ उनका सम्मान समारोह भी रखा गया।

सप्तम वार्षिक महोत्सव संपन्न

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र) : यहाँ 1 से 6 फरवरी तक सप्तमवार्षिक महोत्सव के अवसर पर 170 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के समयसार पर दोनों समय मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया एवं पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री आदि विद्वानों के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: डॉ. राकेशजी शास्त्री द्वारा समयसार पर प्रौढ कक्षा के पश्चात् पूजन-विधान एवं गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन चलता था।

विधान के आयोजनकर्ता श्रीमती सुशीलादेवी शांतिलालजी जैन जयपुर तथा वार्षिकोत्सव शिविर के आयोजनकर्त्ता श्री प्रफुल्ल डी.राजा नैरोबी थे। प्रथम दिन ध्वजारोहण चौधरी परिवार किशनगढ ने किया।

दिनाँक 3 फरवरी को मंगलायतन विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन श्री महावीर जिनमंदिर में वेदी शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री जयंतीभाई दोशी मुम्बई मंचासीन थे। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन श्री पवन जैन ने किया। कार्यक्रम में पण्डित कैलाशचन्दजी जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।

विधि-विधान एवं शिलान्यास विधि के संपूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री ने मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से संपन्न कराये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

01 मार्च	कोटा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
09 व 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
17 व 18 मार्च	दमोह (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
25 व 26 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
31 मार्च से 4 अप्रैल	मुक्तागिरि	विद्वत् ज्ञान गोष्ठी (सेमिनार)
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
01 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व